प्रातः क्लास 17-2-68 ओमशान्ति। "आत्मा को बाप के समान बनना है"

ओमशान्ति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को कहते हैं देखो हम तुम सभी बच्चों को आप समान बनाने आये हैं। आप समान बनाने कैसे आवेंगे। वह तो निराकार है। कहते हैं मैं निराकार हूं तुम बच्चों को भी आप समान अर्थात निराकारी बनाने, जीते जी मरना सिखलाने आया हूं। बाप अपनको आत्मा समझते हैं ना। इस शरीर का भान नहीं है। शरीर में रहते हुये भी शरीर का भान नहीं। यह शरीर इनका तो नहीं है ना। तो तुम बच्चे भी इस शरीर का भान निकालो। तुम आत्माओं को मेरे साथ चलना है। यह शरीर जैसे मैं ने लोन लिया है वैसे तुम आत्मा ने भी लोन लिया है। पार्ट बजाने के लिए। तुम जन्म-जन्मान्तर शरीर ले ले आये हो। अभी मैं जैसे जीते जी इस में हूं परन्तु हूं तो न्यारा, अर्थात मरा हुआ। मरना शरीर छोड़ने को कहा जाता है। तुमको भी जीते जी इस शरीर से मरना है। मैं भी आत्मा हूं। तुम भी आत्मा हो। तुमको भी मेरे साथ चलना है या यहां ही बैठना है। तुम्हारा इस शरीर में जन्म-जन्मान्तर का ममत्व है। जैसे मैं अशरीरी हूं तुम भी जीते जी अपन को अशरीरी समझो। हमको अभी बाबा के साथ जाना है। जैसे बाबा का यह पुराना शरीर है, हम आत्माओं की भी यह पुराना शरीर है। पुरानी जूती को छोड़ना है। जैसे मेरा इन में ममत्व नहीं है, तुम भी इस पुरानी जूती से ममत्व निकालो। तुमको ममत्व रखने की आदत पड़ी हुई है। हमको आदत नहीं है। मैं तो जीते जी मरा हुआ हूं। तुमको भी जीते जी मरना है। मेरे साथ चलना है तो अब यह प्रैक्टीस करो। शरीर में कितना भान रहता है बात मत पूछो। शरीर रोगी हो जाता है तभी भी आत्मा उसको छोड़ती नहीं है। इसमें से तो ममत्व निकालना पड़े। हमको बाबा के साथ जाना है जरूर। अपन को शरीर से न्यारा समझना है। इसको ही जीते जी मरना कहा जाता है। अपना घर ही याद रहना है। तुम इस शरीर में जन्म-जन्मान्तर रहते आये हो। तो तुमको लगी [illegible] करनी पड़ती है। जीते जी मरना पड़ता है। मैं तो इस में आता ही हूं टेम्परारी। तो घर कर चलन- अर्थात अपन को आत्मा समझ कर चलने से कोई भी देहधारी से ममत्व न रहेगा। सभी सेन्टर पर अफसर के किस न किस का किस में मोह हो जाता है। बस उनको देखने बिगर रह न सकेंगे। यह देहधारी की याद एकदम गिराये देगी। बड़ी ऊंची मंजिल है। खाते-पीते जैसे कि मैं इस शरीर में हूं नहीं। वह अवस्था पक्की करनी है। तब ही आठरत्न की माला में जा सकते हैं। मेहनत बिगर थोड़े ही ऊंच पद मिल सकता है। जीते जी देखते हुये समझो मैं तो वहां का रहने वाला हूं। जैसे बाबा इसमें टेम्परारी बैठा है हम भी इस शरीर में टेम्परारी हैं। हमको फिर अभी घर जाना है। घर भी प्यारा लगता है। राजाई भी प्यारी लगती है। जब तक देह का भान न टूटा है तब तक मुक्ति कैसे पावेंगे। इस शरीर का भान एकदम छोड़ दो। तुमको मेरे साथ जरूर चलना है। मुक्ति पाने का अर्थ ही है हम इस शरीर को छोड़ अपने घर जावें। तुम बच्चों को तो पता है बाबा आया हुआ है। अभी घर ले जाते हैं। बाप कहते हैं इस शरीर से ममत्व छोड़ दो। हमको अब घर जाना है। जैसे बाबा का ममत्व नहीं वैसे हमको भी इन में ममत्व नहीं रखना है। बाप को तो इस शरीर बैठ बैठना पड़ता है सिर्फ तुम बच्चों को सिखलाने लिए। तुमको तो चलना है। इसलिए कोई देहधारी में ममत्व न रहे। यह फ्लानी बहुत मीठी है, बुद्धि जाती है ना, आत्मा के बिगर शरीर देखने में आता है। बाप कहते हैं तुमको आत्मा को देखना है। शरीर को देखने से तुम फंस मरेंगे। बड़ी मंजिल है। तुम्हारा जन्म-जन्मान्तर का पुराना ममत्व है। बाबा का ममत्व नहीं है। तब ही तो बच्चों को सिखलाने लायक हैं। बाप खुद कहते हैं मैं इन शरीर में नहीं फंसता हूं। तुम फंसे हुये हो। अभी तुमको छुड़ाने आया हूं। तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुये। अभी शरीर से भान निकालो। देही-अभिमानी हो न रहने से तुम कहां न कहां फंसते रहेंगे। कोई की बात अच्छी लगेगी, शरीर अच्छा लगेगा। घर में भी उनकी अयाद आती रहेगी। जिस पर कि प्यार होगा। हार खा लेंगे। ऐसे बहुत खराब भी हो पड़ते हैं। स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध छोड़ अपन को आत्मा समझना है। यह भी आत्मा है। आत्मा

समझते2फिर शरीर का भान निकलता जावेगा। बाप की याद से ही विकर्म भी विनाश होंगे। इस बात पर तुम बहुत अच्छी रीत बिचार सागर मथन करो। बिचार सागर मथन करने बिगर तुम उछल न सकेंगे। यह पक्का होगा नहीं हमको बाबा पास जाना है जरूर। मूल बात है ही याद की। 84 का चक्र पूरा हुआ फिर शुरू हाना है। हमको घर जरूर जाना है। इस पुरानी दुह से ममत्व न मिटायातो फिर फंस मरेंगे। या तो अपने शरीर में या कोई मित्र-सम्बन्धी के शरीर में या किसी बाहर के बहिन-भाई में। अपनी स्त्री बहुत फर्स्ट क्लास होते हुये भी कोई दूसरी काली से दिल लग जाती है तो फंस मरते। इस पर कहावत है ना "दिल लग गई गदही से तो परी क्या चीज़ है।" बाबा अनुभवी तो है ना। अभी तो तुमको यहां कोई से दिल कदाचित नहीं लगानी है। अब अपनको आत्मा समझ बाप से दिल लगानी है। हम आत्मा भी निराकार, बाप भी निराकार। आधा कल्प भक्ति-मार्ग में तो बाप को ही याद करते आये हो ना। हे प्रभु कहने से शिवलिंग ही सामने आवेंगा। कोई देह-धारी को हे प्रभु कह न सके। सभी शिव के मंदिर में जाते हैंउनको ही परमात्मा समझपूजते हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान एक ही हैं। ऊंच ते ऊंच अर्थात परमधाम में रहने वाला। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी होती थी। फिर व्यभिचारी बन पड़ते हैं। तो बाप बार2 बच्चों को समझाते हैं तुमको ऊंच पद पाना है तो यह प्रैक्टीस करो। देह का भान छोड़ दो। सन्यासी भी विकारों को छोड़ते हैं ना। आगे तो सतोप्रधान थे। अभी तो वह भी तमो-प्रधान बन पड़े हैं। सतोप्रधान आत्मा कशिश करती है। क्योंकि आत्मा फिर पवित्र है तो अपवित्र आत्माओं को खेंचती है। भल पुनर्जन्म में आते हैं तभी भी पवित्र होने कारण खेंचते हैं। कितने उन्हों के फालोअर्स बनते हैं। जितनी पवित्रता की जास्ती ताकत होगी उतने बहुत फालोअर्स । यह बाप तो है ही एवर प्युर। और है भी त। डबल है ना। ताकत सारी उनकी है। इनकी नहीं। शुरूआत में तुमको उन्हों ने कशिश की। क्योंकि वह एवर प्युर है। तुम कोई इनके पिछाड़ी नहीं भागे। यह तो कहते हैं मैं तो पतित था ना। गृहस्थी जरूर पतित ही होगा। सब से जास्ती पूरे 84 जन्म यहप्रवृति मार्ग में रहा है। यह तो खेंच न सके। बाप कहते हैं मैं ने तुमको खेंचा है। तुमको इस(साकार)की तो याद भी न आनी चाहिए। भल सन्यासी पवित्र रहते हैं परन्तु मेरे जैसा पवित्र तो कोई होता नहीं। वह तो सब भक्ति-मार्ग के शास्त्र आद सुनाते हैं। मैं आकर तुमको सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाता हूं। चित्र मे दिखाया है विष्णु के नाभी कमल से ब्रहमा निकला। फिर ब्रहमा के हाथ में शास्त्र दिखाई है। अब विष्णु तो ब्रहमा द्वारा शास्त्रों का सार तो सुनाते नहीं। वह तो विष्णु को भगवान समझ लेते हैं। बाप समझाते हैं विष्णु ब्रहमा के मुख से नहीं सुनाते हैं। मे इन द्वारा सुनाता हूं। मैं विष्णु थोड़े ही हूं। जैसे कृष्ण का उल्टासमझ लिया है । वैसे विष्णु का भी उल्टा समझ वह चित्र लगा दिया है। कहां ब्रहमा, कहां विष्णु। 5000वर्ष का फर्क पड़ जाता है। अभी है ब्रहमा और विष्णु का संगम। ब्रहमा से विष्णु बनते हैं। 84 जन्मों बाद यह संगम होगा। यह तो नई2 बातें हैं। कितनी वन्डर फुल बातें हैं समझाने की। चित्र ऐसा बना कितना मुझाये देते हैं। इन से फिर कापी भी किया है। गांधी से के नाभी से नेहरू निकाला....।

तो अब बाप कहते हैं बच्चे जीते जी मरना है। बाबा हमको वापस लेने आया है। तो यहां सब से ममत्व हटाना है। यहां रहते हुये ममत्व मिटाना मेहनत है। देखते हुये हम आत्मा को देखते हैं। तो फिर ममत्व न रहेगा। इसको ही कहा जाता है जीते जी मरना। तुम शरीर में जीते हो ना। समझते हो हम आत्मा हैं। हम बाबा के साथ चले जावेंगे। यह शरीर आद जो कुछ हैकुछ भी ले न जाना है। अभी बाप आया है तो कुछ तो नई दुनिया में ट्रन्सफर कर देवें। मनुष्य दान-पूण्य आद करते हैं दूसरे जन्म में पाने लिए। तुमको भी नई दुनिया में मिलना है। यह भी करेंगे वही जिन्हों ने कल्प पहले किया है। कम जास्ती कुछ भी होगा ही नहीं। तुम साक्षी हो देखते रहेंगे। कुछ कहने की भी दरकार नहीं रहती। फिर बाप यह भी समझाते हैं जो कुछ करते हैं तो उसका भी अहंकार न आना चाहिए। और यह तो ह वहां जाकर लेंगे। हम आत्मा यह शरीर

छोड़ कर जावेंगे। वहां नई दुनिया में जाकर बाबा से लेंगे। मरने वाले तो बहुत हैं ना। फिर नम्बरवार आते रहेंगे। गाया भी जाता है राम गयो रावण गयो जिनके बहुपरिवार। . . . रावण का परिवार कितना बड़ा है। तुम तो मुठ भार हो। यह सारी रावण सम्प्रदाय है। तुम्हारा राम सम्प्रदाय कितने थोड़े ही हैं। 9लाख। तुम पृथ्वी के सितारे हो ना। मां-बाप और तुम बच्चे। तो बार2 बाप बच्चों को समझाते हैं मरजीवा बनने की कोशिश करो। देखा जाता है कोई अच्छी कुमारी वा जुवा माता देखते हैं उनके देह में ममत्व हो जाता है। यह तो बड़ी ही अच्छी है। बहुत मीठा समझाती है। माया ललचाये देती है। तकदीर में न हे तो फिर माया सामने आ जाती है। कितना भी समझाओ, और ही गुसा लगेगा। यह नहीं समझते हैं यह हमको देहाभिमान छुड़ाते हैं। तकदीर में न है तो जोर से समझाने से और ही टूट पड़ते हैं। इसलिए प्यार से चलाते आते हैं। दिल लग जाती है फिर बात मत पूछो। जैसे कि पपगल हो जाते हैं। बस, मैं तो फलानी से शादी करूंगा। यहां भी आकर कहते हैं हमको फलानी से शादी कराओ। कहा जाता है चुप करो। यहां से भाग जाओ। ऐसे2 भी होते हैं। माया है ना एकदम बेसमझ बना देती है। इसलिए बाप कहते हैं कभी भी किसी के नाम-रूप में नहीं फंसना। मैं आत्मा हूं। एक ही बाप जो कि देही है उनसे ही प्यार रखना है। यही मेहनत है। बाबा की मुरली तो सभी सेन्टर पर सुनेंगे ना। कोई के भी देह में ममत्व न हो। ऐसे भी नहीं घर में बैठे भी वह ज्ञानदेनी वाली याद पड़ें। बहुत मीठी है, बहुत अच्छी समझाती है। अरे मीठा ते ज्ञान है मीठी आत्मा है। शरीर थोड़े ही मीठा है। बात करने वाली भी आत्मा है। शरीर पर आशुक न होना है। इसलिए बाबा कहते हैं फोटो आद भी न निकालो। फंस पड़ेंगे। बाबा को यह बहुत ख़याल आता है फोटो न रखो। चित्रों में तो समझाने लिए फोटो लगा हुआ है। वह ही काफी है। बाकी किसकी भी भी फोटो न रखना बाहिर। अगर इसको याद करेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। शिव बाबा को याद न कर इनको ही याद करते रहेंगे। भल समझते हो यह रथ है। परन्तु शिव बाबा को छोड़ रथ को ही याद करते रहेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। और ही पापात्मा बन पड़ेंगे। शिव बाबा को छोड़ अगर फोटो को याद कियातो समझो और ही गिर पड़ेंगे। कोई भी चित्र न रखना चाहिए। नहीं तो उनमें फंस मरेंगे। आजकल तो भक्ति मार्ग का बहुत है। आत्मा बस मां को भी बस मां2 करते रहते हैं। अच्छा बा कहां? मां बाप बिगर कहां से आवे। वर्सा बाप से मिलता है या बाप से। मां को पैसा कहां से मिलेगा। वह वा कहां? तुमको तो वर्सा शिव बाबा से मिलता है। उनके याद से ही पाप कटेंगे। सिर्फ मां मां करने से जरा भी पाप नहीं कटेंगे। बाप कहते हैं मामेकंयाद करो। नाम-रूप में नहीं फंसना। और ही पाप हो जावेगा। क्योंकि बाप का नाफरमानबरदार बनते हो ना। बहुत बच्चे भूले हुये हैं। बाप समझाते हैं अभी तुम बच्चों को मैं लेने आया हूं। जरूर ले जाऊंगा। सिर्फ मेरे को याद करो तो तुम्हारे पाप कटेंगे। भक्ति-मार्ग में तो बहुतों को याद करते रहे हो। बाप बिगर काम कैसे होगा। बाप थोड़े ही कहते हैं मां को याद करो। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो। पतित-पावन मैं हूं ना। तुम्हारी मां थोड़े ही पतित-पावन है। बाप के डायरेक्शन पर चलो। तुम भी बाप के डायरेक्शन पर औरों को समझाते हो। तुम थोड़े ही पतित पावन ठहरे। तो याद एक को करना चाहिए। हमारा तो एक बाप। दूसरा न कोई। बाबा आप पर ही वारू जाऊंगी। वारी तो जाना शिव बाबा पर ही है ना। और सभी की याद छूट जानी चाहिए। भक्ति मार्ग में बहुतों को याद करते रहते हो। यहां तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई। फिर कोई अपनी चलाते हैं तो उनकी गति होगी। मुंझ पड़ते हैं। बिन्दी को कैसे याद करें। अरे तुमको तो अपनी आत्मा याद है ना कि मैं आत्मा वह भी बिन्दी रूप तुम्हारा बाप है। बाप से वर्सा मिलता है। मां तो फिर देहधारी हो जाती है। वही एक ही वर्सा मिलना है। इसलिए और सभी बातों को छोड़ एक से ही बुधि का योग लगाना है। एक की याद से एक भी पाप नहीं कटेंगा। और ही चढ़ते जावेंगे। मेहनत है ना। कहते हैं बाबा योग में रह

नहीं सकते हैं। अरे तुम तो मूर्ख हो। तुम आत्मा अपने बाप को याद नहीं कर सकते हो। देहाभिमान में आकर कहते हैं हम याद नहीं कर सकते हैं। इसमें बड़ी बु विशाल बुधि चाहिए। बुधि नहीं तो बेताले हो जाते हैं। बाप कहते हैं मामेकंयाद करो। तब ही पाप कटेंगे। देह-धारियों को ही याद करनेसे तुम पतित बने हो। अभी अपनको देही समझो। देही के बाप को याद करना है। कई ममा-बाबा के फोटो लेते हैं। मैं कह देता हूं गिर पड़ेंगे। शियत करते हो लो। पड़ा खड्डे में। घर में भी एक ही शिव बाबा का चित्र हो। बाप तो इतना समझाये फिर भी कहते हैं मनमनाभव। यह बाबा भी गीता ही पढ़ते थे। और ल०ना० की पूजा करते थे। छोटेपन में कृष्ण की करते थे, फिर जब बड़ा हुआ तो कृष्ण को छोड़ ना० की करने लगा। ल० का चित्र भी निकाल दिया। फिर आखिरीन ना० के चित्रों को भी छोड़ दिया। अभी तो शिव बाबा को ही याद करना है। देहधारी को याद करना ही नहीं है। वह तो एवर प्युर हैं। यह तो पूरे 84 जन्मलेने वाला पतित है ना। वह हैं एवर प्युर। यह हैं एवर इमप्युर। इनकी सारी हिस्ट्री बताई। तो अभी बाप कहते हैं सब को वापस जाना है। इसलिए एक बाप को ही याद करना है। इसमें ही मेहनत लगती है। बाप बच्चों को कहते हैं तुम हम से भी जास्ती योग लगा सकते हो। बाबा के पास तो बड़ही मामले रहते हैं। कितने सेन्टर से पत्र आते हैं। ढेर बच्चे हैं। कब किस सेन्टर से कब किस सेन्टर से समाचार आते हैं। ब्राह्मणी भी खुद कहां2 फंस मरती है। माया बड़ी जबरदस्त है। एकदम गठर में गिर पड़ते हैं तो इन सभी बातों का ख़याल तो रहता है ना। बड़ी मेहनत लगती है। सब समाचार तो बाबा के पास आते हैं। इसलिए ही बाबा कहते हैं गुर जाने गुर की गोथरी जाने। इतने सब पत्र पढ़ना, सब का जवाब देना, कितना ख़यालात रहती है। बात मत पूछो। इसलिए बाप कहते हैं तुम बच्चे बहुत भाग्यशाली हो।

बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं बड़ी मेहनत की बात है। यह तो पक्का निश्चय है जो कल्प पहले हुआ था वही होने का है। फिर भी घूटके तो आते हैं ना। अभी अगर घूटके न आये तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। अभी ही घर चले जावेंगे। बहुत घूटके खाने पड़ते हैं। फिर भी कह देते हैं ड्रामा में नूंध है। ऐसे कह ठंढा कर देता हूं। खिट2 तो बहुत होती है ना। कब भी किसको तंग न करना चाहिए। बाप से वर्सा लेना है तो बाप के पूरी श्रीमत पर चलना चाहिए। देह-अभिमान न होनाचाहिए। कोई में2 में देह-अभिमान आया ऐसा होता है बात मत पूछो। हैरान कर देती है। खुद भी हैरान तो लौकिक में बाप भी हैरान तो पारलौकिक भाई-बहिनों को भी हैरान कर देती। इतना हैरान न करना चाहिए। नहीं तो भविष्य में क्या पद पावेंगे। बाप को तो सब को समझाना पड़ता है ना। बहुत मीठा गुल2 खुश-मिज़ाज बनना है। सभीसे प्यार से चलना है। कहां2 तो ब्राह्मणी के नाम-रूप में फंस नाम बदनाम कर देती है, नाक में दम कर देती है। यह नहीं समझते हैं हमको एक ही बाप को याद करना है। नहीं तो पद कैसे पावेंगे। कोई के भी नाम-रूप में नहीं। तो सिध हो जाता है इनका कलाली में है। उनको न देखने से प्राण निकल जाती है। व्यभिचारी बन जाते हैं। बड़ी मेहनत है। मुश्किल कोई विरले माला के दाना बनते हैं। नहीं तो बहुत ही सज़ा खानी पड़ेगी। बाप कहते हैं मेरे को अगर याद न कर दूसरे को याद किया तो व्यभिचारी बन जावेंगे। भक्ति-मार्ग में तुम सिर्फ मेरी ही पूजा करते हो उनको अव्यभिचारी कहा जाता है। अभी तुम औरों से बुधि का योग निकाल एक बाप को याद करेंगे तो उनको अव्यभिचारी याद कहेंगे। अव्यभिचारी बनने में टाईम लगता है। एक बाप के सिवाय और कोई भी देह-धारी को याद न करना है। एक ही शिव बाबा। कितना अच्छी रीत समझाते रहते हैं। बाप जो समझाते हैं उनको तो धारण करनप चाहिए ना।

अच्छा ऐसे बाप के समान बनने वाले, बाप के फरमान मानने वाले वाले, श्रीमत पर चलने वाले बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग। और नमस्ते। ओम।